

செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

83
செவ்வாய் திங்கள் 13/5/11

ॐ नमो श्री हवजाया ॥ लवना ॥ दशहवजसमस्तलवजपंजनादयधर्मादयागहस्तं
 कृतांगनसंमद्विस्वावजकनिकाः स्थितस्वहृदयस्तनकपूष्कपात्रापनि
 शुभ्यः हवजास्यचतुर्थस्तुस्वनाहिनः नवगैलाक्यापैः कृष्णविस्ववजाक
 कपिंण्डुसुदृजः पंचकपालबलूनां नवसिलमालामुदिनपञ्चानांगपनि
 धृतव्याघ्रवम्भो म्वला ॥ वामनोऽग्निनवनतायसस्तोप्यार्धपर्याकाः यादसुहृता
 कोऽयमुदितानेनात्मासमायनं ॥ किंकुजस्वलालोमाना ॥ प्रायुक्तस्वहस्तं ॥ नव

कन्धमाननूपगावक्रापीना ॥ कसमानाः विकृक्क ॥ मृगुमानः महस्वनशुश
 ॥ दवपूष्मागसकाः सोननंयुगवान् ॥ हायां सुदपर्याकः अपनात्मा मालिधा
 सुद्विनिम्यनुमनधः ॥ कृष्णविस्ववजाः दम्बनीनाः कृन्निस्सुषधम्वगुर्विगतिः
 चक्रवतुननगाजग्रास्या ॥ मुखेगुमूलकृष्ण ॥ रुसनसर्वं शुक्लवामनकड्डविक
 नदष्टं गयानि हस्तानि ॥ दक्षिणरुगेष्वजस्वले वानश्चकंचस्वकंदीदृष्टिगुल
 न्कृत्स्व ॥ वामस्वधन्वापन्नः धनूश्चनः स्वदोगकपालं नकनङ्गनिपातध्या ॥

आहवजनेनात्मादवगादवनिहावयन् ॥ ॥ विधिवन्पुजाकानयन् ॥ ॥

पुथ्यासकानयन् ॥ ॥ ओं आइ स्वाहा ॥ ओं देवपिबुवजइइइ ॥ ओं वजकहि

हवजायइं २इइ स्वाहा ॥ ओं कचटपयसइं २इइ स्वाहा ॥ ओं नेनात्मायइं २इइ स्वा

हा ॥ मध्वसुवाय ॥ ओं गं गेनियइं २इइ स्वाहा ॥ पूर्व ॥ ओं वंचो नियइं २इइ

स्वाहा ॥ दक्षिण ॥ ओं वंचनालियइं २इइ स्वाहा ॥ पश्चिम ॥ ओं द्योद्यस्मनियइं २

२

इइ स्वाहा ॥ उत्तर ॥ ओं पूषुक् सियइं २इइ स्वाहा ॥ २० ॥ ओं ससर्वनियइं २इइ स्वा

हा ॥ ओं वंचभुलियइं २इइ स्वाहा ॥ निमृष्य ॥ ओं ओं ओं म्विनीयइं २इइ स्वाहा ॥ अरुण ॥

ओं वंचभुगुल्लोय स्वाहा ॥ पूर्व ॥ ओं गहनाय स्वाहा ॥ ३ ॥ ओं कालीकलाय स्वाहा ॥ प ॥

ओं कलैकलेनवाय स्वाहा ॥ ४ ॥ ओं गृहहासाय स्वाहा ॥ अ ॥ ओं लक्ष्मिवनइं नासना

य स्वाहा ॥ ५ ॥ ओं द्यानीधकानाय स्वाहा ॥ वा ॥ ओं केलिकिलालेवाय स्वाहा ॥ ६ ॥

७ ॥ ओं य स्वाहा ॥ आदि ॥ पं. ला. द्यं. सु. न ॥ हवजायनमस्तु सर्वमायाविमर्दन ॥

वायु

शुभशक्तवृद्धाहिनाश्वशर्वविरुद्धयूनः॥ १ ॥ स्त्रीविनयैर्गगदृष्टायानुनेनास्मा
 गीनी॥ नमःपानामिनामुच्चमानमुद्यनमस्तु॥ २ ॥ इत्येकोनैर्गगदृष्टाः गगद्वय
 प्रमाणयन्॥ एभिन्नरूपाध्वनावजीनस्मात्तुगभिन्नमस्तु॥ ३ ॥ माहाकांतागगदृ
 ष्टागगत्माहृषणायन्॥ चोन्निरूपध्वनावजिः नस्मात्तुचोन्निरूपध्वनावजिः नमस्तु॥ ४ ॥
 मानाकांतागगदृष्टागगत्मानपसादय॥ वनान्तिन्नूपध्वनावजिः नस्मात्तुतात्त्विकनमः॥
 ॥ ५ ॥ नागाकांतागगदृष्टागगत्मागगध्वनावजिः नमस्तु॥ घनान्तिन्नूपध्वनावजिः नमस्तु॥

घनान्तिन्नूपध्वनावजिः नमस्तु॥ ३ ॥ नमस्तुनमस्तुनेनात्मावज्यागिधि॥ पंचहानैरिक्तानाय
 वज्जकायननमः॥ १ ॥ नमस्तुपुष्कसिकदविः नमःसुवनिकगथा॥ नमःचक्षुलिक
 वेवदविशीर्जविकनमः॥ ८ ॥ नेनात्माजननीद्विनवविनाशनागृह्यं॥ नवस्था
 तगतादविः नवयागिनिनमस्तु॥ ९ ॥ वर्पन॥ ओंजुष्टाननायहं२दृष्ट॥ ओंपिरिमाद्र
 कम्पयहं२दृष्ट॥ ओंवदुर्विसृतिननायहं२दृष्ट॥ ओंषादसत्तुकायहं२दृष्ट॥ ओंकृष्
 णिमुनपुत्रायहं२दृष्ट॥ ओंकपालमालानकधानिनहं२दृष्ट॥ ओंआत्मकनविज्ञायहं२

उपनिषद्गोपनीयं वाच्यं सितं न कम्पम् ॥ मां कान्ताधिष्ठीयं च नत्सर्वं वृत्तानादिमन्त्रं न
 सकृत्कृतं वादिकं पंचामृतं पंचप्रदिपं च निष्पादितं कान्तादी ॥ भूतिर्न वेत्ति न दुपनिर्दिष्टं
 वज्रशुक्लपद्मं ॥ पूर्ववत्पुष्पयन्त्रात् ॥ पं. लो. धं. सु. न ॥ पूर्ववत्कलिमालाकावयत् ॥
 इति ह वज्रसंज्ञकं मुख्यायानं पञ्चामुखायानविधिः समाप्तः ॥ शुभः ॥

ॐ नमो श्रीमहासम्बनाय ॥ ॥ ॐ स्वस्ति वज्रशुक्लसर्वधर्मज्ञादि ॥ ॥
 अटिक्लिष्टमहाहंका नानुत्तमयोगिनिगन्धायकं ॥ ऐनर्वकालनात्रिचतुर्यथा
 पतिः कर्षिः कां ॥ १ ॥ तादृयन्तु महाकायं कृष्णं हरिनाथं ॥ पत्सु फति
 लुजासं व. षदादसुप्रिलोचनी ॥ २ ॥ जगमकूटधनं विव. विष्वक्का ईवद
 कं ॥ महादृष्टा कान्तासु सखायसंवत्सरा ॥ ३ ॥ पितृनककुम्भं हरि

महा

विने लग्नां तु हंग सनिता ॥ महा बोडा दहा संच रे व वा विन हि य क्ष ॥ ४ ॥
सव्याव सव्यतः ह्याया अष्टवृन्दयथाक्रम ॥ दानि च मां दिह स्त्री लीया निमुद्रा गथा
पना ॥ ५ ॥ कजा सिक्कं न गिगुलं दऊन तु यथाक्रम ॥ पत्र शु कर्हि वानं व शु ल
हिन लु मंगलं ॥ ६ ॥ चक उ मनु द्यु नि का गज व हि दि पा ल कं ॥ संय का ह न
दु ठि का म पु न पि द्दि का ग था ॥ ७ ॥ का क प ज क र्चि का न अग्नि क षु गु य व न ॥

वग गु द्द द र्प न वी ना गु ल्फ पा नि सु रु द्द ण ॥ ८ ॥ अंग ना ड्ढ नि ग दै व हं ठि इ
ल्य न जालिका ॥ कर्वा ध जाला ने लं च ले न व न्पं डु क मा न् ॥ ९ ॥ वा म धी था
द न द न्द मु स ल पा थ क पा ल कं ॥ ध नु ष द्वा ग पु स्ते नु पि ना नि न र्ज नी ग था ॥ १० ॥
घु घु ल मा धुं व ला गिला ध ग न धू नि का ॥ ए क द क ड च र्म व ल प न क व ना लि का ॥
॥ ११ ॥ बा द ना चि नि क र्शी व गज द त्रि गु म रु कं ॥ रं का ल का ल ना डि च च र्म

बुद्धगुणवर्धिका॥ १२ ॥ गनिन्धनकिनकं वनिविज्जपूवकयडुके॥ शुनि
 तुकायवर्मन्ममघवृज्जिकुणसुथा॥ १३ ॥ अवंकममाविह्यादासफनिकना
 स्रका॥ पंचमुडाकुणालननं यस्मिन्नापगतुषनं॥ १४ ॥ स्रमुदमालिका
 ल्येव कपूर्व नोपनादयो॥ व्याघ्रचर्मनिवगननामावनिचगभगभ॥ १५ ॥
 मस्याग्राममहादेवि लुगवनिवज्जवानाहिका॥ दिह्ज्जसुवाकीह्ववामकपा

लधानिनि॥ १३ ॥ जंघाएणुगवन्कशी वघालिह्ननूनागीनी॥ यककका
 मुककगिनगनातुनकवर्धिका॥ ११ ॥ मुमुमालाशागशी वाशृगभानाएना
 कला विलकपालमालाव दिवगंधान्नागिधि॥ १८ ॥ नोपनिकपूनादिषु
 दिवसगदामलुपिधि॥ यस्मिन्नाह्ननयूकानलाह्नननिनगज्जो॥ १२ ॥
 पलयाग्निह्मदीप्तीमहानगाप्रलुखनापह्मपायसस्रवडव सर्वसिद्धिषुविग्रह

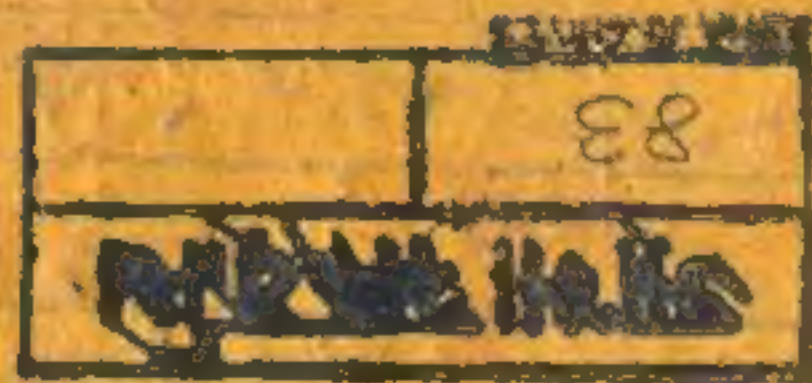
महा

॥ २० ॥ नानाहनुकजाहलिसुखविसुनंगविहावयन् ॥ २१ ॥ सर्वसौख्यसमायुक्तमाङ्गसिद्धिर्दुहिमः ॥
हनुकविहावयन् ॥ २१ ॥ सर्वसौख्यसमायुक्तमाङ्गसिद्धिर्दुहिमः ॥
विधिवत्पुजाकारयन् ॥ पुष्यन्यासः ॥ श्रीहनुकहं हं हं हं गकिधीजालस
स्वनस्वाहा ॥ अं हं हं हं हं हं हं ॥ ॥ अं अं अं सर्वबुद्धगकिनीयवज्रवर्धनी
यवज्रवेलावनीयहं हं हं हं हं हं हं हं स्वाहा ॥ अं गं किनीयहं हं हं ॥ अं वज्ररूपि

कायः ॥ अं वज्रवैविकायहं हं हं ॥ अं वज्रपत्रावनायः ॥ अं वज्रसुवालिकायः ॥ अं व
ज्रजुनवर्तिकायः ॥ अं वज्रलामायः ॥ अं वज्रजालगन्धनियः ॥ अं वज्ररुद्रायः ॥
अं कापालिनियः ॥ अं वज्रकपालिनियः ॥ अं वज्रवर्गिनियः ॥ अं वज्रवज्रनाहः ॥ अं व
ज्रसुम्सानियः ॥ अं वज्रविडवियः ॥ अं वज्रकनकस्त्रियः ॥ अं वज्ररत्नपियः ॥ अं
वज्रजितिलायः ॥ अं वज्ररुद्रायः ॥ अं वाधिविरूपचामुनकहं हं हं ॥ पै लो घे सु क ॥

महा श्रीसम्बतमहाविजयविजयकुलिसम्बत॥ सर्वसिद्धिप्रसिद्धात्सामहसम्बत
नमस्तुते॥ १ ॥ अकियरूपिकायबद्धिकायपनावृता॥ स्वास्तिकान्वर्हि
कामालाशागराविनम॥ २ ॥ रक्षाकायातिनिदविकंकालिनाङ्गवर्हिनी॥
खद्युताहसस्मानीयविदविकृन्तकिका॥ ३ ॥ वज्रवृतागधकायरूपि
निवज्रहेनवि॥ वज्रसुषिजगिलायः रक्षायवाधिविह्वय॥ ४ ॥

यनाद्व्यासाजपूजासर्वसिद्धिरुल्लसद॥ मनावोद्धाकार्यसिद्धिनमामिगधद
वना॥ ५ ॥ नर्पन॥ यधर्मा॥ पिथिकावलि॥ दङ्गनासनाङ्गना॥ वलिविय
पूर्ववत्॥ पूष्यन्यास॥ इति सुकृत्तमहासम्बतपूजामुखाध्यानसुमाफुल्ल॥ वा
XX



महा

१०

१०